International Journal of Engineering, Management, Humanities and Social Sciences Paradigms (IJEMHS)
Volume 35, Issue 01 and Publication Date: 15th March, 2023
An Indexed, Referred and Peer Reviewed Journal
ISSN (Online): 2347-601X
www.ijemhs.com

राजनीति का विकृत रूप तथा भारतीय युवाओं में समावेशी लोकतंत्र की संभावनाएँ

पुष्पा कुमारी

शोध छात्रा, राजनीति शास्त्र विभाग, बी0 एन0 मंडल विश्वविद्यालय, मधेपुरा, बिहार

सार

गिलकाइस्ट के अनुसार ''राजनीति शब्द का अभिप्राय आजकल सरकार की वर्त्तमान समस्याओं से होता है जो बहुत वैज्ञानिक दृष्टि से राजनीतिक ढंग का होने की अपेक्षा आर्थिक ढग की होती है।'' अर्थात् आधुनिक युग में राजनीति का सम्बन्ध केवल आर्थिक, सामाजिक तथा प्रशासकीय समस्याओं से रह गया है। इससे विषय के मौलिक सिद्वान्तों का बोध नहीं होता है। इतना ही नहीं आधुनिक युग में तो राजनीति का अर्थ और भी संकुचित हो गया। हमें बराबर घरेलू राजनीति समूह राजनीति, कॉलेज तथा गाँव की राजनीति की चर्चा सुनने को मिलती है। 'राजनीति' का प्रयोग धोखेबाजी बेईमानी, झूठ–फरेब आदि गलत अर्थों में किया जाता है। आजकल जिस अर्थों में राजनीति का प्रयोग किया जाता है उससे 'राजनीति' शब्द से ही बदबू उठती है। इसका जिक्र करते ही एक साथ न जाने कितने समाज विरोधी तथा घिनौने नक्शे दिमाग में उभर करते ही एक साथ न जाने कितने समाज विरोधी तथा घिनौने नक्शे दिमाग में उभर आते हैं, जैसे जुलूस, नारेबाजी, चुनाव जीतने के हथकण्डे, हडतालें, लाठीचार्ज, भ्रष्ट राजनीतिज्ञ, झूठे आश्वासन, धोखाधड़ी और पैरवी।

मुख्य शब्द–राजनीति, युवा, छात्र, राजनीतिज्ञ,असंतोष, विश्वविद्यालय,

विस्तार

राजनीति को भले लोगों का पेशा नहीं माना जाता। कहने का अर्थ यह कि राजनीति को समाज में पायी जानेवाली एक घृणित क्रिया के रूप में देखा जाता है। उपरोक्त अर्थ राजनीति का विकृत अर्थ है। राजनीति का वास्तविक अर्थ इससे बिल्कुल भिन्न है। राजनीति, वास्तव में, एक व्यापक मौलिक गतिविधि है जो प्रत्येक व्यत्ति को जिम्मेदारी की भावना से प्रभावित करती है। कोई भी यह दावा करने में सक्षम नहीं है कि उनके पास राजनीतिक हित की कमी है। यह किसी भी और हर समय, सभी समाजों में और हर जगह मौजूद है। व्यापक अर्थ में, 'राजनीति का अर्थ ात्ति संघर्ष है।' राजनीति का जन्म तब होता है जब दो या दो से अधिक व्यत्ति किसी मुद्दे के प्रति सचेत हो जाते हैं और समाधन ोजने लगते हैं। वे मुद्दों को हल करने के लिए सहयोग और संघर्ष दोनों का उपयोग करते हैं। इसलिए राजनीति आकार, संगठन, आदिमवाद या आधुनिकता की परवाह किए बिना हर समुदाय, संस्था, राष्ट्र और अंतर्राष्ट्रीय संगठन में मौजूद है। इस संबंध में, हर्बर्ट जे. स्पी ने कहा, 'राजनीति वह क्रिया है जिसके माध्यम से सबसे छोटे और सबसे बड़े मानव संगठन अपनी समस्याओं का सामाधन करते हैं।' यही कारण है कि अब यह स्वीकार कर लिया गया है कि राजनीति का प्रसार राज्य और उसकी संस्थाओं के बाहर रहता है। इस कथन का प्रभाव और अर्थ यह है कि राजनीतिज्ञों का क्षेत्र इतना विस्तृत है कि वह सर्वत्र एक प्रक्रिया के रूप में विद्यमान प्रतीत होता है। छात्र आबादी सभी समाजों के सबसे प्रगतिशील और गतिशील घटकों में से एक है। उनकी

संख्या और एकरूपता, प्रशिक्षण और शिक्षा, आदर्शवाद और ाित्त उन्मु ीकरण, पारिवारिक जिम्मेदारियों से मुत्ति, और तीव्र राजनीतिक जागरूकता के कारण, छात्र एक उच्च संगठित समुदाय का प्रतिनिधित्व करते हैं, जिसका प्रभावी ढंग से उपयोग किया जाए, तो बहुत अधिक ाित्त पैदा कर सकता है। जिसका तत्काल प्रभाव सामाजिक परिवर्तन होगा। विकासशील देशों में, छात्र आबादी में कई सबसे प्रगतिशील और कर्तव्यनिष्ठ तत्व हैं। यदि शिक्षा परिवर्तन का वाहन है, तो शैक्षणिक संस्थान आधुनिकीकरण का वाहन हैं। शिक्षा एक पारंपरिक और प्रतिगामी समाज के आधुनिकीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के लिए छात्र आबादी को तैयार करती है। छात्र साक्षरता के निम्न स्तर वाले समाज के सबसे अस्पष्ट वर्ग का गठन करते हैं और जनमत को आकार देने पर सबसे अधिक प्रभाव डालते हैं।

छात्रों में सामाजिक परिवर्तन आर राजनैतिक उत्थानकर्ता के रूप में अत्यधिक महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है और राष्ट्रवादी आन्दोलन को बामपंथी नेतृत्व प्रदान किया है। काफी संख्या में देश के नेता इसी तरह के छात्र आन्दोलन में प्रशिक्षित हुए हैं। तीसरी दुनियाँ के आज के काफी नेता छात्र राजनीति के माध्यम से आगे आये हैं। छात्रों ने शैक्षणिक भ्रष्टाचार और अन्य अनिमितता के बारे में अधिकारियों के ध्यान आकृष्ट करने में जबरदस्त ग्रुप के रूप में कार्य किया है।

छात्रों का सक्रीय राजनीति में भाग लेना शुरू सेही काफी विवादस्पद विषय रहा है। विभिन्न चिन्तकों का इसके पक्ष एवं विपक्ष में मत रहा है। पेशेवर सत्तारूढ़ दल के राजनीतिज्ञों ने परिसर की अशांति के लिए निहित स्वार्थी तत्व की अनुशासनहीनता को जिम्मेदार ठहराया है। विरोधी दल वालों ने छात्र अशांति को अपने हित में और राजनीतक अस्थिरता पैदा करने में उपयोग करने का प्रयास जब तब किया है। छात्र समुदाय शून्य मे नही निवास करता–वातावरण की समग्रता से काफी प्रभावित होता है।

छात्रों को राजनीति में भाग लेना चाहिए या नहीं यह प्रश्न जटिल है। छात्रों का राजनीति में प्रवेश किस हद तक हो? यह भी एक महत्वपूर्ण प्रश्न है। आज के छात्र ही देश के भविष्य है। इनका चरित्र निर्माण जैसा होगा देश का भविष्य भी वैसा ही होगा। छात्रों को जिस रूप में प्रशिक्षित किया जाएगा उसी रूप में वे देश का नेतृत्व, किसी भी क्षेत्र में कर सकेंगे।

छात्रों का विकास सभी क्षेत्रों में समान रूप से आवश्यक है। अतः राजनीतिक मंच पर भी छात्रों को सही स्थान मिले यह जरूरी है। किसी भी आन्दोलन के संचालन एवं सफलता में छात्र शक्ति का मुख्य योगदान रहता है। अतः छात्रों को राजनीतिक क्षेत्र में उचित स्थान मिले यह भी आवश्यक है। महात्मा गाँधी का यह कथन–

''छात्र को राजनीति में भाग नहीं लेना चाहिए'' बहुत ही महत्वपूर्ण हैं। कुछ व्यति इसका अर्थ यह लगाते हैं कि महात्मा गाँधी छात्रों का राजनीति में प्रवेश पूर्णतः वजिंत मानते थे ऐसी बात नहीं है। महात्मा गाँधी का विचार यह था कि छात्र, राजनीति में निश्चित रूप से भाग में परन्तु इसे पेशा न बनावें। छात्र अपने प्रथम उद्देश्य पठन–पाठन के अतिरिक्त अपने खाली समय में राजनीति में भाग ले तथा देश हित की बात सोचें और करें। छात्रों को अपना मुख्य उद्देश्य राजनीति नहीं समझना चाहिए। आजादी के बाद से राजनीतिक मंच पर छात्रों की भूमिका धीरे–धीरे बढ़ने लगी है। छात्र राजनीति में जमकर लेने लगे हैं।

छात्रों के समकालीन नारे ''यदि राजनीति हमारी शिक्षा और हमारे भविष्य का निर्धारण करती है तो हमें अपनी राजनीति निर्धारित करने में सक्षम होना चाहिए'' में काफी दम है। यदि राजनीतिज्ञों और अधिकारियों के निर्णय छात्रों के दैनिक जीवन तक को प्रभावित करते हैं तो छात्रों को सिर्फ पठन–पाठन और परिसर तक की राजनीति में ही सीमित रहने के लिए नहीं कहा जा सकता है। भारत में सैद्वान्तिक राजनीति की कोई कमी नहीं है। राजनीति के प्रभाव को सभी जगह देखा जा सकता है। छात्र अशांति, शैक्षणिक एवं सामाजिक, अव्यवस्था के खिलाफ विद्रोह की अभिव्यक्ति है। लिप्सेट ने ठीक ही कहा है कि किसी समाज में छात्रों के बहुमत के सक्रीय राजनीति में भाग लेने को असाधरण नहीं समझना चाहिए। विशेष सुविधा प्राप्त ग्रुप होना अति भौतिक सुरक्षा प्रदान करता है जो छात्रों के सक्रिय होने का एक महत्त्वपूर्ण कारक है। छात्र शक्ति को दबाने का अर्थ होगा रचनात्मक विद्रोह का खात्मा और विध्वान्सात्मक बर्बरता या समाधि सदृश शान्ति की शुरूआत।

विकासशील समाज छात्र आबादी पर उनकी अनूठी ताकत के अनुरूप अद्वितीय जिम्मेदारियां डालता है। राजनीतिक जागरूकता और आधुनिक शिक्षा ने छात्रों को प्रभावी राजनीतिक भूमिका निभाने के लिए प्रेरित किया है। सक्रियता के साथ जिम्मेदारी ज्ञान की आवश्यकता है। परिसर में राजनीतिक दलों की घुसपैठ ने अकादमिक जीवन को नकारात्मक रूप से प्रभावित किया है और परिसर के माहौल को बर्बाद कर दिया है।

निश्चित लक्ष्य और साधन के सहारे शुरू किया गया छात्र आन्दोलन अपेक्षित शैक्षणिक सुधार में बड़ा सहायक सिद्व होगा। समझदार और जागरूक छात्र नेतृत्व और समाज के समर्थन एवं प्रोत्साहन से छात्र आन्दोलन अविकसित और विकासशील राष्ट्रों की उन्नति में महत्वपूर्ण योगदान कर सकता है। वर्तमान समय में छात्रों का महत्व राजनीतिक क्षेत्रों में धीरे–धीरे बढ़ने लगा है। समाज के प्रगतिशील तत्व छात्र शक्ति के महत्व को समझने लगे हैं। विभिन्न राजनीतिक दलों ने भी छात्रों के महत्व को स्वीकारा है। 1974 के जे0 पी0 आन्दोलन के मुख्य भाग छात्र ही रहे हैं। छात्रों ने अपनी समस्याओं की पूर्ति हेतु आवाज उठायी। इन्होंने देशव्यापी आन्दोलन शुरू किया जिसे काफी जन समर्थन प्राप्त हुआ। छात्रों की यह लड़ाई बाद में राजनीति से प्रेरित हो गई तथा विरोधी पार्टी ने संघर्ष चलाये। छात्रों की भूमिका इस लड़ाई में भी महत्वपूर्ण रही। इस क्रम में सत्ता परिवर्तन हुए। छात्रों को विश्वास था कि उनकी मुख्य समस्या रोजी रोटी का सामाधन हो सकेगा परन्तु ऐसा कुछ हुआ नहीं। सरकार परिवर्तन के बावजूद व्यवस्था में परिवर्तन सम्भव नहीं हो सका। सन् 1974 के बाद से विभिन्न राजनीतिक दलों के नेताओं को अपने–अपने पक्ष में रखने का प्रयास तेज कर दिया तथा अपनी राजनीति में छात्रों को भी प्रतिनिधित्व देने लगे। डा0 जगन्नाथ मिश्र में गठित सरकार ने विश्वविद्यालय एवं सरकार के विभिन्न निकायों में छात्रों को प्रतिनिधित्व देकर प्रशंसनीय कार्य किया।

आजकल विश्वविद्यालय परिसर का राजनीतिक माहौल बन गया है। सीधे–साधे छात्रों का कोई महत्व नहीं होता। अतः सीधे–साधे छात्र भी अपना महत्त्व बनाने के लिए राजनीति का सहारा लेते है। अर्थात् राजनीति में भाग लेकर वे अपना महत्व स्थापित करना चाहते हैं और इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए अधिकांश छात्र, रजनीति में प्रवेश लेते है।

छात्र यूनियन के अतिरिक्त भी विभागीय परिषद, सांस्कृति परिषद एवं छात्राावास परिषद् इत्यादि के माध्यम से भी छात्रों का राजनीतिकरण होता है। इन परिषदों में वे आसानी से आ जाते हैं तथा बाद में उनका सम्पर्क बहुसंख्यक छात्रों से तथा नेताओं से होता है तथा वे राजनीति में स्वतः हिस्सा लेने लगते हैं।

प्रथम सत्र में प्रवेश करने वाले छात्रों को छात्र यूनियन का चुनाव राजनीति में प्रवेश का अच्छा मौका देता है। इस चुनाव में अपना संगठन शक्ति का परिचय आम छात्रों एवं नेताओं पर छोड़ जाते है जिसके कारण आगे चलकर उन्हें राजनीति में भाग लेने का सीधा मौका मिल पाता है।

विभिन्न राजनीतिक दलों से सम्बद्ध युवा संगठन को भी छात्रों के राजनीतिकरण हेतु जिम्मेदार ठहराया जाता है। छात्रों के बीच विभिन्न दलों से सम्बद्ध ये युवा संगठन छात्रों को राजनीति में भाग लेने हेतु प्रोत्साहित करते हैं।

इस प्रकार, कॉलेज और राजनीतिक समूह दोनों ही छात्रों के लिए समाजीकरण के अवसरों के रूप में कार्य करते हैं। कॉलेज में छात्रों के शैक्षणिक विकास पर जोर दिया जाता है, जिसके माध्यम से वे उपयुत्त विषय ज्ञान प्राप्त करते हैं। राजनीतिक दलों के लिए छात्रों के बीच राष्ट्रीयता जैसे उच्च नैतिक मानकों को बढ़ावा देना भी संभव है।

मनुष्य न तो सहज रूप से सामाजिक है और न ही असामाजिक। उसकी सामाजिकता उसके समाजीकरण की प्रक्रिया पर निर्भर करती है। यह समाजीकरण की प्रक्रिया जन्म के तुरंत बाद शुरू होती है। सबसे पहले, वह अपनी माँ या नर्स से बातचीत करता है, जो उसकी दे भाल करती है। चूँकि माँ या दाई शिशु को समय पर ि लाती, नहलाती और सुलाती है, इसलिए वह हर समय उसकी शारीरिक सुरक्षा और ुशी सुनिश्चित करती है। इसलिए बच्चे की मां या दाई उसके जीवन में ुशी का पहला स्रोत होती है, नतीजतन, वह ुशी का अनुभव करता है, जो संभवतः मानव अस्तित्व का अंतिम उद्देश्य है। जैसे–जैसे वह परिपक्व होता है, वह परिवार के अन्य सदस्यों, जैसे कि उसके भाइयों और बहनों से परिचित हो जाता है। फिर, जैसे–जैसे वह परिपक्व होता है, वह अपने हमउम्र मित्रों से परिचित हो जाता है, जिनके साथ वह अपना अधिकांश समय व्यतीत करता है। अपने दोस्तों के साथ `लों में, वह दूसरों के बीच सहयोग, उदारता, सहानुभूति और सामाजिक चेतना जैसे सामाजिक कौशल तेजी से हासिल करता है। जैसे ही वह स्कूल में प्रवेश करता है, वह अपने गैर–शिक्षण सहपाठियों के साथ बातचीत करता है, और इसके परिणामस्वरूप, उसके समाजीकरण कौशल का तेजी से विकास होता है। अब उसे स्कूल की सामाजिक मान्यताओं, अपेक्षाओं और नियमों के अनुरूप होना चाहिए, यदि वह सफल होता है, तो वह सामाजिक मान्यता प्राप्त करेगा और प्रशंसा का पात्र होगा।यदि वह ऐसा करने में विफल रहता है, तो उसे सामाजिक मान्यता नहीं मिलेगी और उसकी निंदा की जाएगी। नतीजतन, वह एक सामाजिक चेतना विकसित करता है, क्योंकि वह महसूस करता है कि इस तरह के आचरण के माध्यम से ही वह सामाजिक स्थिति प्राप्त कर सकता है। व्यक्ति की सामाजिक चेतना का जागरण स्पष्ट रूप से उसके माता–पिता, उसके साथियों, उसके शिक्षकों और पूरे समाज की जिम्मेदारी है।

निष्कर्ष

राजनीतिक दलों के मन में भी एक विशिष्ट उद्देश्य होता है जब वे छात्र–संबंधी संगठन बनाते हैं। उनकी इच्छा है कि छात्रों को उचित प्रशिक्षण और चरित्र विकास प्राप्त हो ताकि वे अच्छे नागरिक बन सकें और भविष्य में देश और पार्टी को सही दिशा में निर्देशित कर सकें। पूर्ववर्ती पहलू उच्च आदर्शों से प्रेरित है। यह भी आवश्यक है कि राजनीतिक दल छात्र संगठनों के माध्यम से अपनी–अपनी विचारधराओं से प्रभावित

छात्रों को संगठित करें और छात्र ाक्ति को सही दिशा में निर्देशित करें। भारतीय राजनीतिक दलों से जुड़े कई छात्र संगठन आज छात्रों के बीच सक्रिय हैं। कुछ संगठन सराहनीय भूमिका निभाते हैं। अधिकांश छात्र नेता परिवार के सदस्य हैं जिनकी कोई राजनीतिक पृष्ठभूमि नहीं है। इस प्रकार, छात्र संघ की राजनीति में छात्रों की भागीदारी इस बात पर निर्भर नहीं करती है कि उनके परिवार का राजनीति से संबंध है या नहीं, और बड़ी संख्या में व्यक्ति स्पष्ट उद्देश्य के बिना छात्र राजनीति में प्रवेश करते हैं। यह पता चला कि अधिकांश मतदाताओं को शुरू में राजनीति में कोई दिलचस्पी नहीं थी और अपने साथियों के आग्रह पर छात्र संघ के राजनेताओं में प्रवेश किया।

संदर्भ

1- हसीनद्दीन – भारत में रोजगार दफ्तरों की भूमिका – वाणिज्य वि0 मुस्लिम विश्वविद्यालय अलिगढ़।
2- राकेश कुमार पांडेय –''रोजगार दफ्तर सिर्फ आंकडे संभालते है'' नवभारत टाइम्स
3- योगेन्द्र लाल दास –''शिक्षा की फीकी दुकानों में रोजगार की मुँहताज ऊँची तालिम'' नवभारत टाइम्स
4- मदन शर्मा – ''शिक्षित बेरोजगारी'' योजना–फरवरी–मार्च 1979.
5- रीचर्ड फ्रलैक्स – ''यूथ एण्ड सोसाइटी'' 1971.
6- के0 केनिस्टन – ''यूथ एण्ड डिसेन्ट'' दी राइज ऑफ ए न्यू अपोजीशन''1971.
7- जी0 आर0 मदन – ''इण्डियन सोशल प्रोवलम'', भोल्यूम वन 1980.
8- रोवर्ट के0 मर्टन एण्ड रोवर्ट नीसवर्ट– कनटेम्परोरी सोशल प्रोब्लमस भोल्युम फोर एडिसन
9- भटनागर के0 एम0 – मोवलाइनजेशन ऑफ रूरल यूथ फार डेवलपमेन्ट'